Andher Nagari

A Corrupt System

जिस स्थान पर कोई नियम न हो, कोई व्यक्ति सात्विक विचारों वाला न हो, दिन और रात में कोई अंतर न स्पष्ट हो तो वहाँ की राजकीय व्यवस्था चौपट ही कहलाती है ।

Lokesh Ch. Lal
8/26/2013

अंधेर नगरी

पहला दृश्य

स्थान - बाहरी प्रांत

[महंत जी दोनों चेलों के साथ गाते हुए आते हैं ।]

सब : राम भजो राम भजो राम भजो भाई। राम के भजे से गनिका तर गई, राम के भजे से गीध गति पाई।

महंत : बच्चा नारायन दास, यह नगर तो दूर से बहुत सुंदर दिखाई दे रहा है पर देख, कुछ भिच्छा - उच्छा मिल जाये तो ठाकुर जी को भोग लगे और क्या।

नारायणदास : महाराज, नगर तो नारायण के आसरे से बहुत ही सुंदर है । जो है सो, पर भिच्छा सुंदर मिले तो बहुत सुंदर होय।

महंत : बच्चा नारायणदास तू पूरब की ओर और गोबरधनदास, तू पश्चिम की ओर जायेगा। देख कुछ खाने को मिले तो श्रीशालग्राम जी का बालभोग सिद्ध हो।

गोबरधनदास : महंत जी मैं बहुत सी भिच्छा लाता हूँ। यहा के लोग बहुत धनवान लगते है। आप चिंता मत कीजिये।

महन्त : बहुत लोभ मत करना। देखना हाँ-

लोभ पाप को मूल है , लोभ मिटावत मान।

लोभ कभी मत किजिये , या मैं नरक निदान॥

[गाते हुये सब जाते हैं]

दूसरा अंक

[स्थान-बाजार]

घासीराम : चने जोर गरम-

चने बनावे घासीराम।

जिनकी झोली में दुकान॥

चना हाकिम सब जो खाते ।

सब पर दूना टिकस लगाते ॥

चने जोर गरम-टके सेर्।

हलवाई : मोयनदार कचौडी कचाका, हलुआ नरम चभाका।

ऐसी जात हलवाई जिसके छत्तीस कौम हैं भाई।

कुंजडिन : ले धनिया मेथी ।ले बैंगन कौंहडा आलू। जैसे काजी वैसे पाजी। रैयत राजी टके सेर भाजी। ले हिंदुस्तान का मेवा फूट और बैर।

पाचकवाला : हिंदू चूरन इसका नाम ।

बिलायत पूरन इसका काम ॥

चूरन जब से हिंद में आया।

इसका धन बल सभी घटाया॥

जातवाला : जात ले जात, टके सेर जात।एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं।टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जाये और धोबी को ब्राह्मण कर दें।

बनिया : आटा चावल नमक घी लकडी मसाला सब टके सेर।

[बाबाजी का चेला गोबरधनदास आता हैं और सब बेचने वालों की आवाज सुन सुनकर खाने के आनंद में बड़ा प्रसन्न होता हैं।]

गोबरधनदास : क्यों भाई बनिये, आटा कितने सेर ?

बनिया : टके सेर ।

गोबरधनदास : और चावल ?

बनिया : टके सेर ।

गोबरधनदास : [कुंजड़िन के पास जाकर] क्यो माई भाजी कैसे भाव ?

कुंजड़िन : बाबाजी, टके सेर ।

गोबरधनदास : सब भाजी टके सेर । वाह-वाह बड़ा आनंद हैं। यहाँ सभी चीज टके सेर।

(हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई मिठाई कितने सेर ?

हलवाई : बाबा जी, जलेबी, गुलाब जामुन, खाजा सब टके सेर ।

गोबरधनदास : क्यों बच्चा मुझसे मस्ती तो नहीं करता ? सचमुच सबकुछ टके सेर ।

हलवाई : हाँ, बाबाजी, इस नगरी की चाल ही यही है । यहाँ सब चीज टके सेर मिलती है ।

गोबरधनदास : क्यों बच्चा इस नगरी का नाम क्या है ?

हलवाई : अंधेर नगरी ।

गोबरधनदास : और राजा का क्या नाम है ?

हलवाई : चौपट राजा ।

गोबरधनदास : वाह - वाह ! अंधेर नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।

(यही गाता है और आनंद से विगुल बजाता है।)

हलवाई : तो बाबा जी, कुछ लेना - देना हो तो लो - दो । वर्ना आगे रास्ता नापो ।

गोबरधनदास : बच्चा, भीक्षा माँगकर सात पैसे लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे, गुरु - चेले सब ठाठ से खाएंगे ।

[हलवाई मिठाई तौलता है - बाबाजी मिठाई लेकर खाते हुए और अंधेर नगरी का गुण गाते हुए जाते हैं ।]

तीसरा अंक

स्थान - जंगल

[महंत जी और नारायनदास एक ओर से 'राम भजो' इत्यादि गाते हुए आते हैं और दूसरी ओर से गोबरधनदास 'अंधेर नगरी' गाते हुए आते हैं।]

महंत : बच्चा गोबरधनदास ! बता, क्या भीक्षा लाया है ? गठरी तो बहुत भारी मालुम पड़ती है ।

गोबरधनदास : बाबाजी महाराज ! बड़ा सामान लाया हूँ । साढ़े तीन सेर मिठाई है ।

महंत : देखूँ तो ! **(मिठाई की झोली अपने सामने रखकर खोलकर देखता है।)** वाह ! वाह ! बच्चा ! इतनी मिठाई कहाँ से लाया ? किस धर्मात्मा से भेंट हुई ?

गोबरधनदास : गुरुजी महाराज ! सात पैसे भीख मिले थे, उसी से इतनी मिठाई खरीदी है ।

महंत : बच्चा ! नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज टके सेर मिलती है, तो मैंएं इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा यह कौन - सी नगरी है और इसकाराजा कौन है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर ही खाजा है ?

गोबरधनदास : अंधेर नगरी, चौपट राजा । टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।

महंत : तो बच्चा ! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी, टके सेर खाजा हो ।

गोबरधनदास : गुरुजी, ऐसा तो संसार भर में कोई देश नहीं है । दो पैसा पास में रहने से ही मजे में पेट भरता है । मैं तो इस नगरी को छोड़कर नहीं जाऊँगा और दूसरे जगह दिन भर माँगो तो भी पेट नहीं भरता । कई - कई बार तो हमें उपवास रहना पड़ता है ।

महंत : देख बच्चा ! पीछे पछताएगा ।

गोबरधनदास : आपकी की कृपा से कोई दुख न होगा ; मैं तो यही कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए ।

महंत : मैं तो इस नगरी में एक क्षण भी नहीं रहूँगा । देख मेरी बात मान नहीं तो पछताएगा । मैं तो जाता हूँ । लेकिन कोई सकंट पड़े तो याद करना ।

गोबरधनदास : प्रणाम गुरुजी, मैं आपको हमेशा याद रखूँगा । मैं तो फिर भी कहता हूँ कि ....

[महंत जी नारायणदास के साथ जाते हैं, गोबरधनदास बैठकर मिठाई खाता है ।]

चौथा अंक

स्थान - राजसभा

[राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं ।]

एक सेवक : (चिल्लाकर) पान खाइए महाराज ।

राजा : (नींद से चौक कर उठता है) क्या कहा ? सुपनखा आई ए महाराज । (भागता है)

मंत्री : (राजा का हाथ पकड़कर) नहीं , नहीं महराज, यह कहता है कि पान खाइए महाराज ।

राजा : दुष्ट, पागल । ऐसे ही हमको डरा दिया । मंत्री इसको सौ कौड़े लगाओ ।

मंत्री : महाराज इसका क्या दोष है ? न तो तमोली पान लगाकर देता और न यह आपको पुकारता ।

राजा : अच्छा, तमोली को फिर दो सौ कोड़े लगाओ ।

मंत्री : पर महाराज, आप पान खाइए सुनकर थोड़े ही डरे हैं, आप तो सुपनखा के नाम से डरे हैं, सुपनखा को सजा दीजिए ।

राजा : (घबड़ाकर) फिर वही नाम ? मंत्री तुम बड़े खराब आदमी हो । हम रानी से कह देंगे कि मंत्री बार - बार तुम्हारी सौत बुलाने को कहता है ।

[नेपथ्य में - 'दुहाई है दुहाई ' का शब्द होता है]

मंत्री : कौन चिल्लाता है - पकड़ कर लाओ । **(दो नौकर एक फरियादी को पकड़कर लाते हैं)**

फरियादी : दोहाई है महाराज दोहाई है । हमारा न्याय कीजिए महाराज ।

राजा : चुप रहो । तुम्हारा न्याय तो ऐसा होगा जैसा कि यमलोक में भी न हुआ होगा । बोलो क्या हुआ ?

फरियादी : महाराज ! कल्लू बनिया की दीवार गिर पड़ी और मेरी बकरी उसके नीचे दब गई । न्याय हो ।

राजा : (नौकर से) कल्लू बनिए की दीवार को अभी पकड़कर लाओ ।

मंत्री : महाराज, दीवार कैसे लाई जा सकती है ।

राजा : अच्छा ! तो उसका भाई, लड़का, दोस्त जो हो उसे ही पकड़कर लाओ ।

मंत्री : महाराज, दीवार ईंट, चूने की होती है, उसका भाई - बेटा नहीं होता ।

राजा : अच्छा, तो कल्लू बनिए को पकड़कर लाओ । **(सिपाही दौड़ कर जाता है और कल्लू बनिए को लाता है)** क्यों बे बनिए, इसकी लरकी, नहीं बरकी, मेरा मतलब है बकरी क्यों दबकर मर गई ? जल्दी बोल नहीं तो तुझे मैं फाँसी देता हूँ ।

कल्लू : महाराज ! मेरा कुछ दोष नहीं । कारीगर ने ऐसी दीवार बनाई कि गिर पड़ी ।

राजा : अच्छा, इस मल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ । **(कल्लू जाता है और कारीगर को पकड़कर लाता है।)** क्यों बे कारीगर ! इसकी बकरी किस तरह मर गई ?

कारीगर : महाराज, मेरा कुछ कसूर नहीं, चूनेवाले ने ऐसा बोदा चूना बनाया कि दीवार गिर गई ।

राजा : अच्छा, उस चूने वाले को बुलाओ **(कारीगर निकाला जाता है, चूनेवाला पकड़कर लाया जाता है)** क्यों बे खैर - सुपाड़ी - चूनेवाले ! इसकी कुबरी कैसे मर गई ?

चूनेवाला : महाराज, मुझे माफ कीजिए पर भिश्ती ने चूने में ज्यादा पानी मिला दिया जिससे चूना कमजोर हो गया ।

राजा : अच्छा, चून्नी को निकालो, भिश्ती को पकड़ो । **(चूनेवाला निकाला जाता है और भिश्ती को पकड़ा जाता है)** क्यों भिश्ती, इतना पानी क्यों दिया कि इसकी बकरी गिर गई और दीवार मर गई ?

भिश्ती : महाराज ! इस गुलाम का कोई कसूर नहीं, कस्साई ने मसक इतनी बड़ी बनाई कि उसमें पानी जादे हो गया ।

राजा : कस्साई को पकड़ लाओ । **(कस्साई को लाया जाता है ।)** क्यों रे कस्साई मशक बड़ी क्यों बनाई कि दीवार गिराई और बकरी दबाई ।

कस्साई : महाराज गड़ेरिए ने इतनी बड़ी भेड़ बेची कि मैं क्या करता ?

राजा : अच्छा, कस्साई को निकालो, गड़ेरिए को लाओ । **(कस्साई निकाला जाता है और गड़ेरिए को पकड़ा जाता है)** क्यों बे गड़ेरिए, इतनी बड़ी भेड़ क्यों बेची कि इसकी बकरी मर गई ।

गड़ेरिया : महाराज, उधर से कोतवाल साहब की सवारी आ गई, सो उसको देखने में मैंने छोटी - बड़ी भेड़ का ख़्याल नहीं रहा, मेरा कुछ कसूर नहीं ।

राजा : अच्छ, इसको निकालो और अभी कोतवाल को हाज़िर करो । **(गड़ेरिया निकाला जाता है और कोतवाल को पकड़ा जाता है)** कोतवाल, तूने सवारी ऐसी धूम से क्यों निकाली कि गड़ेरिया ने घबराकर बड़ी भेड़ बेची, जिससे बकरी गिरी और कल्लू बनिया दब गया ?

कोतवाल : महाराज, महाराज ! मैंने तो कोई कसूर नहीं किया, मैं तो शहर के इंतजाम के वास्ते जाता था ।

मंत्री : (अपने - आप) यह तो बड़ा गजब हुआ, ऐसा न हो कि यह बेवकूफ इस बात पर सारे नगर को फाँसी दे दे । **(कोतवाल से)** यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाली ?

राजा : हाँ - हाँ, यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाली कि उसकी बकरी दबी ?

कोतवाल : महाराज, महाराज -

राजा : कुछ नहीं, ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो । दरबार बरखास्त ।

[लोग एक तरफ कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं और दूसरी ओर से मंत्री को पकड़कर राजा जाते हैं ।]

पाँचवाँ अंक

स्थान - अरण्य

[अंधेर नगरी, अनबूझ राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा (गोबरधनदास गीत गाता है)]

गोबरधनदास : गुरुजी ने ऐसे ही हमको यहाँ रहने से मना किया था । माना कि देस बहुत बुरा है, पर अपना क्या ? रोज हमको मिठाई खाने को मिल जाए बस, मजे में रामभजन करना है ।

[मिठाई खाता है । प्यादे उसे चारो ओर से पकड़ लेते हैं ।]

पहला सिपाही : अरे चल, बहुत मिठाई खाकर मुटाया है ।

गोबरधनदास : (घबराकर) ये क्या आफ़त है भाई ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझे पकड़ रहे हो ?

पहला सिपाही : आपने क्या बिगाड़ा है या बनाया है इससे क्या मतलब, अब चलिए फाँसी चढ़िए ।

गोबरधनदास : (घबराकर) फाँसी ! अरे बाप रे बाप फाँसी । पर मैंने किया क्या है ?

दूसरा सिपाही : आप बड़े मोटे हैं, इसलिए फाँसी होगी । फाँसी कोतवाल को होनी थी पर फंदा बड़ा बन गया इसलिए मोटे आदमी को ही फाँसी देनी होगी । आखिर न्याय तो करना ही होगा ।

गोबरधनदास : मोटे होने के कारण फाँसी ! यह क्या बात हुई ?

दूसरा सिपाही : पता नहीं पर सीधी राह से चलते हो या घसीटकर ले चले ।

[गोबरधनदास को घसीटते हुए लाते हैं।]

छठा अंक

स्थान - श्मशान

गोबरधनदास : अरे हाय रे बाप ! बेकसूर को फाँसी देते हो । अरे कुछ तो धरम विचारो ।

पहला सिपाही : ऐ, चुप रह प राजा का हुक्म भला टल सकता है । राम का नाम ले और फाँसी पर चढ़ जा ।

गोबरधनदास : काश मैंने गुरुजी का कहना माना होता, आज उसी का फल मिल रहा है । गुरुजी ने कहा था मत रह ऐसे शहर में पर मैं ही नहीं माना । हे राम । गुरुजी ..... गुरुजी, बचाओ गुरुजी - **(रोता है)**

गुरुजी : अरे बच्चा गोबरधनदास ! यह तेरी क्या दशा है ?

गोबरधनदास : (पैर पर गिरकर) गुरुजी ! दीवार के नीचे बकरी दब कर मर गई, इसलिए ये लोग मुझे फाँसी दे रहे हैं । ये क्या न्याय है ? गुरुजी बचाओ ।

गुरुजी : बच्चा! मैंने तो पहले ही कहा था कि ऐसे शहर में मत रह पर तू तो माना नहीं ।

गोबरधनदास : गुरुजी रक्षा करो गुरुजी ।

गुरुजी : कोई चिंता नहीं । **(सैनिकों से)** सुनो, मुझे अपने शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो, तुमलोग थोडा किनारे हो जाओ, देखो मेरा कहना नहीं मानोगे तो तुम्हारा भला न होगा ।

सिपाहीगण : नहीं महाराज ! आप बेशक उपदेश दीजिए, हमलोग हट जाते हैं ।

[सिपाही हट जाते हैं । गुरुजी चेले के कान में कुछ समझाते हैं।]

गोबरधनदास : (जोश में) तब तो गुरुजी हम जरूर फाँसी चढ़ेंगे ।

गुरुजी : नहीं बच्चा, मुझको फाँसी चढ़ने दे ।

गोबरधनदास : नहीं गुरुजी, हम ही फाँसी पर चढ़ेंगे ।

गुरुजी : नहीं बच्चा । इतना समझाया फिर भी नहीं मानता,हम बूढ़े भए, हमको जाने दे ।

गोबरधनदास : स्वर्ग जाने में बूढ़ा क्या और जवान क्या गुरुजी ।

[इसी प्रकार दोंनो हुज्जत करते हैं । सिपाही लोग चकित हो जाते हैं ।]

पहला सिपाही : भाई ! यह क्या माज़रा है, कुछ समझ नहीं आ रहा है ।

दूसरा सिपाही : हमको भी समझ में नहीं आ रहा है ।

[राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं ।]

राजा : यह क्या गोलमाल है ?

पहला सिपाही : महाराज ! चेला कहता है मैं फाँसी चढ़ूँगा, गुरु कहता है, मैं चढ़ूँगा । मालुम नहीं पड़ता कि क्या बात है ?

राजा : (गुरु से) बाबा जी ! बोलिए आप फाँसी चढ़ने को क्यों बेचैन हैं ?

गुरुजी : राजा ! इस समय ऐसा मुहूर्त यह है कि जो मरेगा वह सीधा स्वर्ग जाएगा ।

मंत्री : तब तो हम फाँसी चढ़ेंगे ।

गोबरधनदास : हम - हम, हमको तो हुकुम है फाँसी का ।

कोतवाल : हम लटकेंगे । हमारे कारण तो दीवार गिरी ।

राजा : चुप रहो, सब लोग । राजा के होते दूसरे क्यों इसका लाभ उठाएंगे । हमको फाँसी चढ़ाओ । जल्दी ।

[सिपाही राजा को फाँसी पर चढ़ाते हैं ।]

गुरु जी : जहाँ न धर्म न बुद्धि, नहीं नीति न सुजन समाज ।

ते ऐसेहि आपुहि नसैं, जैसे चौपट राज ॥

Formatted version of **'Andher Nagari'** for Skit

By Lokesh Chandra Lal

.... ********* .... ********* .... **........ ********* .... ********* ....